अष्टम (८) भाव से विचारणीय विषय —

आयुः रणं रिपुं चापि दुर्गं मृतधनं तथा।
गत्यनूकादिकं सर्वं पश्येद्रन्ध्राद्विचक्षणः॥

आयु, युद्ध, रिपु, दुर्ग, मृत व्यक्ति का धन, मृत्यु के बाद की गति, पूर्व जन्म की स्थिति आदि विचार रन्ध्र (अष्टम) भाव से करना चाहिये।

नवम् (९) भाव से विचारणीय विषय —

भाग्यं श्यालं च धर्मं च भ्रातृपत्न्यादिकांस्तथा।
तीर्थयात्रादिकं सर्वं धर्मस्थानान्निरीक्षयेत्॥

भाग्य, पत्नी का भाई, धर्म, भाई की स्त्री, तीर्थ-यात्रा, इनका विचार धर्म (नवम्) भाव से करना चाहिये।

दशम (१०) भाव से विचारणीय विषय —

राज्यं चाकाशवृत्तिं च मानं चैव पितुस्तथा।
प्रवासस्य ऋणस्यापि व्योमस्थानान्निरीक्षणम्॥

राज्य, आकाश वृत्तान्त, मान, पिता, प्रवास, ऋण इत्यादि का विचार कर्म (दशम) भाव से समझना चाहिए।

P.T.O

चतुर्थ (४) भाव से विचारणीय विषय —

वाटिकाग्रामगेहादि वृद्धिस्थानं गमागमौ ।
प्रवेशं मातरं चैव निधिमन्त्रौषधं सुखे ॥

बाग, ग्राम, मकान, उन्नति, पद, गमन, आगमन, प्रवेश, माता, गड़ा कुआ धन, मंत्र तथा औषध आदि का विचार बन्धु (चतुर्थ) भाव से करना चाहिये।

पञ्चम (५) भाव से विचारणीय विषय —

यन्त्रमन्त्रौ तथा विद्या बुद्धेश्चैव प्रबन्धकम् ।
पुत्रराज्यापभ्रंशादीन् पश्येत्पुत्रालयाद् बुधः ॥

यन्त्र, मन्त्र, विद्या, बुद्धि, पुत्र, राज्यापभ्रंश आदि का विचार पुत्र (पञ्चम) भाव से बताना चाहिये।

षष्ठ (६) भाव से विचारणीय विषय —

मातुलान्तकशङ्कानां शत्रूंश्चैव व्रणादिकान् ।
सपत्नीमातरं चापि षष्ठभावान्निरीक्षयेत ॥

मामा, मृत्यु, रोग, शत्रु, व्रण, सौतेली माँ, इन सब का विचार शत्रु (षष्ठ) भाव से करना चाहिये।

सप्तम (७) भाव से विचारणीय विषय —

जायामध्वप्रयाणं च वाणिज्यं नष्टवीक्षणम् ।
मरणं च स्वदेहस्य जायाभावान्निरीक्षयेत ॥

स्त्री (पत्नी), यात्रा, व्यापार, नष्ट वस्तु की शोध, मृत्यु ये सब विचार स्त्री (सप्तम) भाव से करना चाहिये।

P.T.O

कार्यविशेष में निन्द्य योग—

गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम् ।
भौमेऽश्विनी शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥

मङ्गलवार को अश्विनी गृह-प्रवेश में, शनि को रोहिणी यात्रा में तथा बृहस्पतिवार को पुष्य विवाह में वर्जित है। किन्तु अन्य कार्यों में ये सर्वार्थसिद्ध योग कहे गये हैं।

दुर्मुहूर्तयोग—

सूर्ये षण्मुनि-नाग दिङ् मनुमिताश्चन्द्रे ऽक्षिवस्वर्कसुरा—
ङ्काऽर्का विश्वपुरन्दराः क्षितिसुते व्यक्ष्यग्नितर्का दिशाः।
सौम्ये द्व्यब्धिगजाङ्क-दिङ-मनुमिता जीवे द्वि-षड्भास्करा:
शक्राख्यास्तिथयः कलाश्च भृगुजे वेदेषु-तर्क-ग्रहाः।
दिग्-भास्करा मनुमिताश्च शनौ शशि द्वि—
नागा दिशो भव-दिवाकर-सम्मिताश्च।
दुष्टः क्षणः कुलिक-कण्टक-कालवेला:
स्युश्चार्द्धयामयमघण्टगताः कलांशाः ॥

रविवार में ६,६,८,१०,१४ वें, सोमवार में ४,६,८, ९,१२,१३,१४ वें, मङ्गलदिन २,३,४,६,१० वें, बुध में २,४,८,९,१०,१४ वें, गुरु में २,६,१२,१४,१५,१६ वें, शुक्र में ४,५,६,९,१०,१२,१४ वें तथा शनिवार में १,२,८, १०,११,१२ वें, ये कलांश (मुहूर्त= षोडशांश अर्थात् दिनमान का सोलहवाँ हिस्सा) तुल्य मुहूर्त दुष्टक्षण (दुर्मुहूर्त) कहलाते हैं, क्योंकि इनमें कुलिक, कण्टक, कालवेला, अर्धयाम, यमघण्ट आदि हैं। ये शुभकार्यों में त्याज्य हैं।

P.T.O

उपशास्त्री

कुलिक, कालवेला, यमघण्ट और कण्टकयोग —

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः ।
वाराद् द्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः ॥

वर्तमान वार से शनिवार, बुध, गुरु तथा मङ्गलवार तक गणना करने से जो संख्या हो उसको दूना करने से जो संख्या हो तत्संख्यक मुहूर्त क्रमशः कुलिक, कालवेला, यमघण्ट और कण्टक होते हैं, जो शुभकर्म में वर्ज्य हैं।

दिन	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कुलिक	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघण्ट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कण्टक	६	४	२	१४	१२	१०	८
अर्द्धयाम	७.८	१३.१४	३.४	९.१०	१५.१६	५.६	११.१२

वर्जनीय योग —

वर्जयेत् सर्वकार्येषु हस्तार्कं पञ्चमीतिथौ ।
भौमाश्विनीं च सप्तम्यां, षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं तथा ॥
बुधानुराधामष्टम्यां, दशम्यां भृगुरेवतीम् ।
नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ॥

पञ्चमी में हस्त सहित रविवार, सप्तमी में अश्विनी सहित मङ्गल, षष्ठी में मृगशिरा के साथ सोमवार, अष्टमी में अनुराधा सहित बुधवार, दशमी में रेवती के साथ शुक्रवार, नवमी में पुष्य सहित गुरु और एकादशी में रोहिणी के साथ शनिवार, ये योग शुभकार्य में वर्जित हैं।

P.T.O